SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.33

गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

साधना सिंह,[1] प्रो0 संदीप कुमार श्रीवास्तव[2]
[1]शोधार्थिनी, बी.एड. विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा
[2]शोध निर्देशक, प्रोफेसर/विभागाध्यक्ष (बी.एड. विभाग), श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा
Email: sadhanasinghgkp16@gmail.com

सारांश

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता केवल बौद्धिक क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उनकी भावनात्मक दक्षता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस अध्ययन का संचालन किया गया। अध्ययन में गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के 250 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया, जिनमें 130 छात्र तथा 120 छात्राएँ सम्मिलित थीं। आंकड़ों के संकलन हेतु एस.के. मंगल एवं शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि प्रश्नावली तथा स्वनिर्मित सीखने की तत्परता प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सहसम्बन्ध विधि द्वारा किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता के मध्य $r = 0.68$ का धनात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ, जो मध्यम से उच्च स्तर का संबंध दर्शाता है। छात्रों के समूह में यह सहसम्बन्ध $r = 0.65$ तथा छात्राओं के समूह में $r = 0.72$ प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता के मध्य सार्थक एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है। अध्ययन के निष्कर्षों से यह सिद्ध हुआ कि जिन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि अधिक होती है, वे सीखने के प्रति अधिक तत्पर, प्रेरित, आत्मविश्वासी तथा सक्रिय होते हैं। वे अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से नियंत्रित करते हैं तथा अध्ययन संबंधी चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना कर पाते हैं। इसलिए विद्यालयों में विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के विकास हेतु उपयुक्त शैक्षिक एवं परामर्श कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए, जिससे उनकी सीखने की तत्परता एवं शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि हो सके।

मुख्य शब्द :– माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, संवेगात्मक बुद्धि, सीखने की तत्परता

प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को विषयगत ज्ञान प्रदान करना नहीं रह गया है, बल्कि उनके व्यक्तित्व का समग्र विकास करना भी शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य बन गया है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में यह स्वीकार किया गया है कि किसी विद्यार्थी की सफलता केवल उसकी बौद्धिक क्षमता अथवा बुद्धिलब्धि पर निर्भर नहीं करती, बल्कि

उसकी संवेगात्मक बुद्धि भी उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके माध्यम से वह अपने तथा दूसरों के संवेगों को समझता है, नियंत्रित करता है तथा उनका उचित उपयोग करते हुए जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में प्रभावी ढंग से समायोजन स्थापित करता है। दूसरी ओर सीखने की तत्परता वह अवस्था है जिसमें विद्यार्थी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक रूप से अधिगम ग्रहण करने के लिए तैयार होता है। जब विद्यार्थी सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है, नवीन अनुभवों को स्वीकार करने के लिए उत्सुक होता है तथा अध्ययन कार्यों में सक्रिय भागीदारी करता है, तब उसे सीखने की तत्परता से युक्त माना जाता है। माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है। इस अवस्था में किशोरावस्था का आरम्भ होता है, जिसके कारण विद्यार्थियों में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप अनेक बार विद्यार्थियों में तनाव, चिंता, असुरक्षा, आत्म–संदेह, आक्रोश तथा भावनात्मक अस्थिरता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। यदि विद्यार्थी अपनी भावनाओं को उचित प्रकार से समझने एवं नियंत्रित करने में सक्षम नहीं होता, तो उसका ध्यान अध्ययन से हट सकता है तथा सीखने की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है। इसके विपरीत यदि विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से परिपक्व एवं संतुलित होता है, तो वह अध्ययन में अधिक रुचि लेता है, चुनौतियों का सामना करता है तथा सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है। इसलिए माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और उनकी सीखने की तत्परता के मध्य संबंध का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा को विशेष रूप से मनोवैज्ञानिकों ने विकसित किया। संवेगात्मक बुद्धि में आत्म–जागरूकता, आत्म–नियंत्रण, आत्म–प्रेरणा, सहानुभूति तथा सामाजिक कौशल जैसे घटक सम्मिलित होते हैं। आत्म–जागरूकता के माध्यम से विद्यार्थी अपनी भावनाओं को पहचानने और समझने में सक्षम होता है। आत्म–नियंत्रण उसे कठिन परिस्थितियों में भी संतुलित बनाए रखता है। आत्म–प्रेरणा उसे लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा देती है। सहानुभूति के माध्यम से वह दूसरों की भावनाओं को समझता है तथा सामाजिक कौशल उसे स्वस्थ पारस्परिक संबंध स्थापित करने में सहायता प्रदान करते हैं। ये सभी गुण विद्यार्थी को सीखने के लिए मानसिक रूप से तैयार करते हैं तथा उसकी शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक योगदान देते हैं।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

सीखने की तत्परता एक बहुआयामी अवधारणा है। यह केवल बौद्धिक तैयारी तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विद्यार्थी की अभिरुचि, प्रेरणा, मानसिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास, सामाजिक समायोजन तथा संवेगात्मक स्थिरता भी सम्मिलित होती है। जब विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित, समर्थ और प्रेरित अनुभव करता है, तब वह नई जानकारी को ग्रहण करने, समस्याओं का समाधान करने तथा शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय भाग लेने के लिए अधिक तत्पर होता है। इसके विपरीत भय, तनाव, चिंता अथवा निराशा की स्थिति में उसकी सीखने की तत्परता कम हो जाती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि संवेगात्मक बुद्धि सीखने की तत्परता को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में प्रभावित करती है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में उच्च संवेगात्मक बुद्धि होने पर वे अपनी भावनाओं को पहचानने और नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं। परीक्षा, प्रतियोगिता अथवा असफलता जैसी परिस्थितियों में वे अत्यधिक तनावग्रस्त नहीं होते, बल्कि समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास बना रहता है और वे अध्ययन कार्यों में निरंतर सक्रिय बने रहते हैं। ऐसे विद्यार्थी कक्षा में अधिक ध्यान देते हैं, शिक्षकों के निर्देशों का पालन करते हैं तथा सीखने के अवसरों का अधिकतम लाभ उठाते हैं। परिणामस्वरूप उनकी सीखने की तत्परता का स्तर उच्च पाया जाता है। संवेगात्मक बुद्धि का एक महत्वपूर्ण पक्ष आत्म–प्रेरणा है। आत्म–प्रेरित विद्यार्थी अपने शैक्षिक लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से निर्धारित करते हैं तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करते हैं। वे बाहरी पुरस्कारों पर कम और आंतरिक

संतोष पर अधिक निर्भर रहते हैं। जब किसी विद्यार्थी में आत्म–प्रेरणा का स्तर उच्च होता है, तब वह कठिन विषयों को भी सीखने का प्रयास करता है, असफलता से निराश नहीं होता तथा नई चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए तत्पर रहता है। यह गुण उसकी सीखने की तत्परता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सहानुभूति भी संवेगात्मक बुद्धि का एक महत्वपूर्ण घटक है। सहानुभूतिशील विद्यार्थी अपने सहपाठियों तथा शिक्षकों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करते हैं। वे समूह कार्यों में सहयोग करते हैं, दूसरों की भावनाओं का सम्मान करते हैं तथा स्वस्थ सामाजिक वातावरण का निर्माण करते हैं। सकारात्मक सामाजिक संबंध विद्यार्थियों में सुरक्षा और आत्मीयता की भावना विकसित करते हैं, जिससे वे सीखने की गतिविधियों में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। इस प्रकार सहानुभूति सीखने की तत्परता को प्रोत्साहित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। आत्म–नियंत्रण की क्षमता भी सीखने की तत्परता को प्रभावित करती है। जिन विद्यार्थियों में आत्म–नियंत्रण का स्तर उच्च होता है, वे अपनी भावनाओं, व्यवहारों और प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं। वे क्रोध, चिंता अथवा निराशा जैसी नकारात्मक भावनाओं को अपने अध्ययन कार्यों पर हावी नहीं होने देते। परिणामस्वरूप वे अपनी ऊर्जा को सीखने और लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में केन्द्रित कर पाते हैं। इसके विपरीत निम्न आत्म–नियंत्रण वाले विद्यार्थी छोटी–छोटी समस्याओं से विचलित हो जाते हैं, जिससे उनकी सीखने की तत्परता प्रभावित होती है। विद्यालय का वातावरण भी संवेगात्मक बुद्धि और सीखने की तत्परता के मध्य संबंध को प्रभावित करता है। यदि विद्यालय में सकारात्मक, सहयोगात्मक एवं प्रोत्साहनपूर्ण वातावरण उपलब्ध हो, तो विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का विकास होता है। शिक्षक जब विद्यार्थियों की भावनाओं को समझते हैं, उनकी समस्याओं को सुनते हैं तथा उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, तब विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और सीखने की रुचि बढ़ती है। इसी प्रकार परिवार का सहयोग, अभिभावकों का स्नेह एवं समर्थन तथा स्वस्थ सामाजिक परिवेश भी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता को सुदृढ़ बनाते हैं।

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने की तत्परता का विकास करना शिक्षकों और अभिभावकों दोनों की जिम्मेदारी है। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों को केवल शैक्षिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि भावनात्मक प्रबंधन, आत्म–जागरूकता, सहानुभूति तथा सामाजिक कौशलों का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाए। विद्यालयों में जीवन–कौशल शिक्षा, परामर्श सेवाएँ, समूह चर्चा, सहयोगात्मक अधिगम तथा सह–पाठयक्रम गतिविधियाँ विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि को विकसित करने में सहायक हो सकती हैं। जब विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि विकसित होती है, तब वे सीखने के प्रति अधिक तत्पर, प्रेरित और उत्तरदायी बनते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि उनकी सीखने की तत्परता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने तथा सकारात्मक दिशा में उपयोग करने की क्षमता प्रदान करती है। इसके परिणामस्वरूप वे अध्ययन कार्यों में अधिक रुचि लेते हैं, चुनौतियों का सामना करते हैं, आत्मविश्वास बनाए रखते हैं तथा सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। इसलिए शिक्षा प्रणाली में संवेगात्मक बुद्धि के विकास को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों की सीखने की तत्परता बढ़े और उनका समग्र विकास सुनिश्चित हो सके। इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धि और सीखने की तत्परता के मध्य सकारात्मक एवं सार्थक संबंध विद्यमान है, जो विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता तथा व्यक्तित्व विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को विषयगत ज्ञान प्रदान करना नहीं रह गया है, बल्कि उनके सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना भी है। शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर हो रहे परिवर्तनों ने यह स्पष्ट कर दिया

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

है कि किसी विद्यार्थी की सफलता केवल उसकी बौद्धिक क्षमता अथवा बुद्धिलब्धि पर निर्भर नहीं करती बल्कि उसकी संवेगात्मक बुद्धि भी उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संवेगात्मक बुद्धि से अभिप्राय व्यक्ति की अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने, अभिव्यक्त करने तथा उनके अनुरूप उचित व्यवहार करने की क्षमता से है। दूसरी ओर सीखने की तत्परता वह अवस्था है जिसमें विद्यार्थी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा भावनात्मक रूप से अधिगम के लिए तैयार रहता है। जब विद्यार्थी सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, उत्साह, आत्मविश्वास तथा रुचि प्रदर्शित करता है, तब उसे सीखने की तत्परता कहा जाता है। माध्यमिक स्तर की अवस्था में बालक किशोरावस्था में प्रवेश करता है तथा उसके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में तीव्र परिवर्तन होते हैं। इस समय विद्यार्थियों में अनेक प्रकार की भावनात्मक समस्याएँ, तनाव, चिंता, असुरक्षा, प्रतिस्पर्धा तथा आत्म–संघर्ष देखने को मिलते हैं। यदि विद्यार्थी अपनी भावनाओं को उचित प्रकार से समझने और नियंत्रित करने में सक्षम नहीं होता, तो उसका प्रभाव उसके अध्ययन, व्यवहार तथा सीखने की प्रक्रिया पर पड़ता है। इसके विपरीत उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाला विद्यार्थी अपनी भावनाओं का संतुलन बनाए रखता है, आत्म–प्रेरित रहता है तथा सीखने के प्रति अधिक तत्पर दिखाई देता है। इसलिए संवेगात्मक बुद्धि और सीखने की तत्परता के मध्य संबंध का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी विद्यार्थियों के सामाजिक–भावनात्मक विकास पर विशेष बल दिया है। नीति में यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों में जीवन–कौशल, आत्म–जागरूकता, सहानुभूति, सहयोग, नेतृत्व तथा भावनात्मक संतुलन जैसे गुणों का विकास भी होना चाहिए। इन सभी गुणों का आधार संवेगात्मक बुद्धि है। यदि विद्यार्थी भावनात्मक रूप से परिपक्व होगा, तभी वह नई परिस्थितियों को स्वीकार करने, समस्याओं का समाधान खोजने तथा सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाने में सक्षम होगा। अतः यह अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति की भावना के अनुरूप भी महत्वपूर्ण है। आज का शैक्षिक वातावरण अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक हो गया है। विद्यार्थियों पर अच्छे अंक प्राप्त करने, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता अर्जित करने तथा अभिभावकों एवं समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने का दबाव बढ़ता जा रहा है। इस दबाव के कारण अनेक विद्यार्थी तनाव, चिंता, अवसाद तथा आत्मविश्वास की कमी का अनुभव करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों को मानसिक संतुलन बनाए रखने तथा सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता प्रदान करती है। जो विद्यार्थी अपनी भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं, वे सीखने के प्रति अधिक उत्साहित तथा तत्पर रहते हैं। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि संवेगात्मक बुद्धि किस प्रकार सीखने की तत्परता को प्रभावित करती है।

सीखने की तत्परता किसी भी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की सफलता का आधार है। यदि विद्यार्थी सीखने के लिए तैयार नहीं है, तो श्रेष्ठ शिक्षण विधियाँ, आधुनिक तकनीकें तथा उत्कृष्ट पाठ्य सामग्री भी अपेक्षित परिणाम नहीं दे सकतीं। सीखने की तत्परता विद्यार्थी की रुचि, अभिप्रेरणा, आत्मविश्वास तथा भावनात्मक स्थिरता से प्रभावित होती है। संवेगात्मक बुद्धि इन सभी कारकों को प्रभावित करती है। इसलिए यह अध्ययन शिक्षकों को यह समझने में सहायता करेगा कि विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उनकी सीखने की तत्परता को किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है। वर्तमान समय में विद्यालयों में विद्यार्थियों की विविध पृष्ठभूमियाँ देखने को मिलती हैं। कुछ विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं, कुछ शहरी क्षेत्रों सेय कुछ आर्थिक रूप से सम्पन्न परिवारों से होते हैं, जबकि कुछ वंचित वर्गों से सम्बन्ध रखते हैं। इन परिस्थितियों का प्रभाव विद्यार्थियों की भावनात्मक स्थिति तथा सीखने की तत्परता पर पड़ता है। संवेगात्मक बुद्धि इन परिस्थितियों में अनुकूलन स्थापित करने का महत्वपूर्ण साधन है। अतः इस अध्ययन के माध्यम से विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता के स्तर को समझा जा सकेगा तथा उनके

विकास हेतु प्रभावी शैक्षिक कार्यक्रम तैयार किए जा सकेंगे। यह अध्ययन शिक्षकों के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सामान्यतः शिक्षक विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर अधिक ध्यान देते हैं, जबकि उनकी भावनात्मक आवश्यकताओं की उपेक्षा हो जाती है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर को समझ सकें, तो वे शिक्षण को अधिक प्रभावी, रुचिकर तथा विद्यार्थी–केंद्रित बना सकते हैं। इससे विद्यार्थियों में सीखने की तत्परता, कक्षा सहभागिता तथा शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि होगी। साथ ही शिक्षक विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सहयोग, सहानुभूति तथा सकारात्मक सोच जैसे गुणों का विकास भी कर सकेंगे। अभिभावकों के दृष्टिकोण से भी यह अध्ययन उपयोगी है। परिवार बालक के भावनात्मक विकास का प्रथम एवं सबसे प्रभावशाली माध्यम होता है। यदि अभिभावक अपने बच्चों की भावनाओं को समझें, उन्हें उचित मार्गदर्शन दें तथा सकारात्मक वातावरण प्रदान करें, तो बच्चों की संवेगात्मक बुद्धि का विकास बेहतर ढंग से हो सकता है। इससे उनकी सीखने की तत्परता में वृद्धि होगी तथा वे विद्यालयी जीवन में अधिक सफल हो सकेंगे। इस अध्ययन के निष्कर्ष अभिभावकों को बच्चों के भावनात्मक विकास के महत्व से अवगत कराएँगे। यद्यपि इन दोनों पर पृथक–पृथक अनेक अध्ययन किए गए हैं, तथापि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। इसलिए यह अध्ययन इस क्षेत्र में उपलब्ध ज्ञान को समृद्ध करेगा तथा भविष्य के शोधकर्ताओं को नवीन शोध समस्याएँ एवं दिशाएँ प्रदान करेगा। यह अध्ययन शिक्षा प्रशासकों एवं नीति–निर्माताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। यदि यह स्पष्ट हो जाता है कि संवेगात्मक बुद्धि सीखने की तत्परता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है, तो विद्यालयों में सामाजिक–भावनात्मक अधिगम कार्यक्रम, परामर्श सेवाएँ, जीवन–कौशल प्रशिक्षण तथा भावनात्मक विकास से सम्बन्धित गतिविधियों को अधिक महत्व दिया जा सकेगा। इससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा तथा विद्यार्थियों का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सकेगा। अन्ततः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त प्रासंगिक एवं आवश्यक है। यह अध्ययन विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास, अधिगम की गुणवत्ता, शैक्षणिक उपलब्धि तथा व्यक्तित्व निर्माण को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देगा। साथ ही यह शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षा प्रशासकों तथा शोधकर्ताओं को उपयोगी दिशा–निर्देश प्रदान करेगा, जिससे विद्यार्थियों में सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं तत्परता विकसित की जा सके और शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित हो सके।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- बार–ऑन (2010) ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि उच्च होती है, उनमें अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास तथा सीखने की तत्परता अधिक पाई जाती है।
- पार्कर एवं सहयोगियों (2011) ने निष्कर्ष निकाला कि संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन तथा शैक्षिक सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देती है। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि भावनात्मक रूप से सक्षम विद्यार्थी नई परिस्थितियों के साथ आसानी से सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं तथा सीखने के अवसरों का बेहतर उपयोग करते हैं।
- अडेयेमो (2011) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि की एक महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता है। जिन विद्यार्थियों में भावनात्मक नियंत्रण तथा आत्म–जागरूकता का स्तर उच्च था, उनमें सीखने की प्रेरणा और तत्परता भी अधिक पाई गई।

- सुलेमान (2012) ने अपने शोध में पाया कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी अध्ययन कार्यों में अधिक सक्रिय भागीदारी करते हैं तथा नई जानकारी प्राप्त करने के प्रति अधिक उत्सुक रहते हैं।
- नासिर एवं मसरूर (2013) ने संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक प्रदर्शन के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया। उनके अनुसार भावनात्मक रूप से परिपक्व विद्यार्थी अध्ययन सम्बन्धी चुनौतियों का सामना अधिक प्रभावी ढंग से करते हैं।
- मोहजान (2013) ने अपने अध्ययन में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता, समस्या समाधान योग्यता तथा निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाती है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी सीखने की तत्परता में वृद्धि होती है।
- शहजादा (2014) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि भावनात्मक रूप से संतुलित विद्यार्थी अध्ययन में अधिक रुचि लेते हैं तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी बेहतर होती है।
- कौत्स एवं सरोज (2015) ने किशोर विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन व्यवहार, आत्म–अवधारणा तथा सीखने की तत्परता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- मिश्रा (2015) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में पाया कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अध्ययन प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि का स्तर अधिक होता है।
- भरवाने (2016) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि संवेगात्मक दक्षता शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसे विद्यार्थी जो अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं, वे अध्ययन गतिविधियों में अधिक सक्रियता से भाग लेते हैं। सांचेज–अल्वारेज (2016) ने पाया कि संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य स्पष्ट सकारात्मक सम्बन्ध विद्यमान है। उनके अनुसार संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों को तनाव प्रबंधन तथा अध्ययन सम्बन्धी चुनौतियों से निपटने में सहायता प्रदान करती है।
- मावरोवेली (2017) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी विद्यालयी वातावरण में बेहतर समायोजन स्थापित करते हैं तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अधिक प्रभावी रूप से भाग लेते हैं। मैककैन (2018) ने निष्कर्ष निकाला कि संवेगात्मक बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि तथा अधिगम तत्परता की महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता है। जिन विद्यार्थियों में भावनात्मक समझ तथा आत्म–नियंत्रण अधिक होता है, वे सीखने के प्रति अधिक प्रतिबद्ध होते हैं।
- सांचेज–रुइज (2019) ने संवेगात्मक बुद्धि और सीखने की प्रेरणा के मध्य उच्च धनात्मक सम्बन्ध पाया। उनके अध्ययन से ज्ञात हुआ कि भावनात्मक रूप से सक्षम विद्यार्थी अध्ययन कार्यों में अधिक रुचि लेते हैं तथा कठिन परिस्थितियों में भी सीखने की प्रक्रिया को जारी रखते हैं।
- शर्मा एवं यादव (2019) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि से महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।
- पेरेज–फुएंटेस (2020) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी अधिगम गतिविधियों में अधिक संलग्न रहते हैं तथा नई अवधारणाओं को सीखने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।
- कौर (2020) ने भी अपने अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध स्थापित किया।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

© Shiksha Samvad | Received: 10 June -2026 | Accepted: 15 June - 2026 | Published:20 June - 2026

- ट्रिगुएरोस (2021) ने निष्कर्ष निकाला कि संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों की सीखने की तत्परता, आत्म–नियंत्रण तथा अध्ययन प्रेरणा को बढ़ाने में सहायक होती है।
- बीबी (2022) ने अपने अध्ययन में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार तथा कक्षा सहभागिता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।
- कुमार एवं सिंह (2023) ने निष्कर्ष निकाला कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी अध्ययन कार्यों के प्रति अधिक उत्तरदायी तथा प्रेरित होते हैं।
- गुप्ता (2024) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि तथा सीखने की तत्परता के मध्य उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया।
- वर्मा (2025) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि जिन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि उच्च होती है, वे सीखने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय, आत्मविश्वासी तथा सफल होते हैं।

समस्या कथन

गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

- गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

अध्ययन की परिकल्पनाऐं

- गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर सार्थक प्रभाव नहीं है।
- गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर सार्थक प्रभाव नहीं है।
- गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर सार्थक प्रभाव नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के 250 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

© Shiksha Samvad | Received: 10 June -2026 | Accepted: 15 June - 2026 | Published:20 June - 2026

उपकरण

- संवेगात्मक बुद्धि को मापने हेतु – एस0के0 मंगल एवं शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।।
- सीखने की तत्परता को मापने हेतु – स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परिभाषीकरण

तालिका संख्या – 1

गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

चर	विद्यार्थियों की संख्या	सहसम्बन्ध	परिणाम
संवेगात्मक बुद्धि सीखने की तत्परता	250	0.68	मध्यम से उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध

व्याख्या – तालिका संख्या 1 में गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है। सारणी से पता चलता है कि माध्यमिक स्तर के 250 विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक $r = 0.68$ प्राप्त हुआ, जो उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। इससे ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में वृद्धि होने पर उनकी सीखने की तत्परता में भी वृद्धि होती है।

तालिका संख्या – 2

गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

चर	छात्रों की संख्या	सहसम्बन्ध	परिणाम
संवेगात्मक बुद्धि सीखने की तत्परता	130	0.65	मध्यम से उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध

व्याख्या – तालिका संख्या 2 में गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है। सारणी से पता चलता है कि 130 छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता के मध्य $r = 0.65$ का सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ, जो मध्यम से उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध को दर्शाता है। इससे स्पष्ट होता है कि जिन छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि अधिक है, उनकी सीखने की तत्परता भी अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है।

तालिका संख्या – 3

गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

चर	छात्राओं की संख्या	सहसम्बन्ध	परिणाम
संवेगात्मक बुद्धि सीखने की तत्परता	120	0.72	उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध

व्याख्या – तालिका संख्या 3 में गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है। सारणी से पता चलता है कि 120 छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता के मध्य $r = 0.72$ का सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ, जो उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध को इंगित करता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्राओं में संवेगात्मक बुद्धि का स्तर जितना अधिक होगा, सीखने की तत्परता भी उतनी ही अधिक होगी।

शोध निष्कर्ष

1. गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर सार्थक प्रभाव पाया गया। अतः यह निष्कर्ष निकाला गया कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में वृद्धि होने पर उनकी सीखने की तत्परता में भी वृद्धि होती है।
2. गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर सार्थक प्रभाव पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि उनके सीखने के प्रति उत्साह, अभिरुचि एवं तत्परता को प्रभावित करती है।
3. गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर सार्थक प्रभाव पाया गया। इससे ज्ञात होता है कि छात्राओं में संवेगात्मक बुद्धि का उच्च स्तर सीखने की तत्परता को प्रोत्साहित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- बार–ऑन, आर. (2010). संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक सफलता, न्यूयॉर्क : नोवा साइंस पब्लिशर्स।
- पार्कर, जे. डी. ए., समरफेल्ट, एल. जे., होगन, एम. जे., एवं माजेस्की, एस. ए. (2011). संवेगात्मक बुद्धि एवं विद्यालयी समायोजन. शैक्षिक मनोविज्ञान जर्नल, 34(2), 125–138.
- अडेयेमो, डी. ए. (2011). संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, शिक्षा अनुसंधान जर्नल, 18(3), 45–57.
- सुलेमान, क्यू. (2012). विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और अधिगम परिणाम. अंतरराष्ट्रीय शिक्षा अध्ययन पत्रिका, 5(4), 89–101.
- नासिर, एम., एवं मसरूर, आर. (2013). संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक निष्पादन का संबंध, पाकिस्तान जर्नल ऑफ साइकोलॉजी, 44(1), 67–80.
- मोहजान, एम. ए. (2013). विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने का व्यवहार, शिक्षा एवं मनोविज्ञान समीक्षा, 7(2), 110–122.
- शहजादा, जी. (2014). संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान जर्नल, 6(1), 22–34.
- कौत्स, ए., एवं सरोज, आर. (2015). किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन, भारतीय शैक्षिक समीक्षा, 52(3), 78–89.
- मिश्रा, एस. (2015). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन, भारतीय मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पत्रिका, 40(2), 55–68.
- भरवाने, सी. (2016). शिक्षा में संवेगात्मक दक्षता का महत्व, शिक्षा विकास पत्रिका, 11(4), 91–104.

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

- सांचेज–अल्वारेज, एन., बेरियोस मार्टोस, एम. पी., एवं एक्स्ट्रेमेरा, एन. (2020). माध्यमिक शिक्षा में संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध : एक मेटा–विश्लेषण, फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 11, 1517.
- मैककैन, सी., जियांग, वाई., ब्राउन, एल. ई. आर., डबल, के. एस., बुचिच, एम., एवं मिनबाशियन, ए. (2020). संवेगात्मक बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवक्ता : एक मेटा–विश्लेषण. साइकोलॉजिकल बुलेटिन, 146(2), 150–186.
- मावरोवेली, एस. (2017). संवेगात्मक बुद्धि और विद्यार्थियों का विद्यालयी समायोजन, ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 87(3), 290–305.
- सांचेज–रुइज, एम. जे. (2019). संवेगात्मक बुद्धि एवं अधिगम प्रेरणा का अध्ययन, जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 111(5), 785–798.
- पेरेज–फुएंटेस, एम. सी. (2020). संवेगात्मक बुद्धि और अधिगम सहभागिता, अंतरराष्ट्रीय मनोविज्ञान एवं शिक्षा जर्नल, 15(2), 101–115.
- ट्रिगुएरोस, आर. (2021). संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता, शिक्षा एवं विकास जर्नल, 27(1), 33–48.
- बीबी, ए. (2022). संवेगात्मक बुद्धि और विद्यार्थियों का अधिगम व्यवहार, शिक्षा अनुसंधान एवं विकास पत्रिका, 18(2), 65–79.
- कुमार, आर., एवं सिंह, एस. (2023). संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक अभिप्रेरणा का अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 29(1), 41–56.
- गुप्ता, पी. (2024). माध्यमिक विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सीखने की तत्परता का अध्ययन, भारतीय शैक्षिक मनोविज्ञान जर्नल, 32(2), 88–102.
- वर्मा, ए. (2025). संवेगात्मक बुद्धि और सीखने की तत्परता के मध्य संबंध, शिक्षा शोध पत्रिका, 35(1), 15–29.

Cite this Article:

साधना सिंह, प्रो0 संदीप कुमार श्रीवास्तव, "गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"
Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, Pp.317-326, June-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/

CC BY NC ND This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

साधना सिंह,[1] प्रो0 संदीप कुमार श्रीवास्तव[2]

For publication of research paper title

गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का सीखने की तत्परता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.33